

महावाणी - विश्वकल्याण की वाणी

२१/०९/२०२६

ॐ परमात्मने नमः

परमात्मा गुरु जी को नमस्ते। परमात्मा गुरु जी को यह सेवा समर्पण है।

सभी आत्माएं अपने मूलस्वरूप स्थिति में बैठ जाएं... सभी अपनी मूलस्वरूप अवस्था को देखें... देखिए अपना मूलस्वरूप... यही मेरा सत्य स्वरूप है... देखिए अपने लाइट को... चमकता हुआ सितारा... अपने सिंहासन पर विराजमान है... मैं एक लाइट हूँ... यह मेरा मूलस्वरूप है... देखते जाइए अपने मूलस्वरूप स्थिति को... अनुभव करें अपनी मूल अवस्था को... जो कि आत्मा की.. रियल ओरिजिनल अवस्था है... देखते जाइए... यही मेरा सत्य स्वरूप है... यही मैं हूँ...

जब तक कोई अपने आपको आत्मा सितारा, जो लाइट का सितारा है वह नहीं समझते तब तक आप झूठ में ही जी रहे हो। सुबह उठने से लेकर रात सोने तक अगर आपको यह याद नहीं रहता कि आप एक लाइट आत्मा हो और वह लाइट जो आप आत्मा हो वही आपके सभी कर्मेन्द्रियों को चलाती है जब तक इस भान में कोई नहीं आता तब तक पूरे दिन भर में आपके साथ जो कुछ भी हो रहा है वह सब कुछ मायावी है। जिस शरीर में आप आत्मा बैठी हो वह पाँच तत्वों का बना हुआ शरीर है, पर आप आत्मा आपके सभी तत्वों के ऊपर कंट्रोल पा सकती हो पर यह कब होगा जब आपको सदैव यह याद रहेगा कि आप आत्मा हो ना कि यह पाँच तत्वों का बना हुआ आप शरीर हो। ज्ञान के रूप में यह बात अति साधारण लगेगी कि हाँ यह शरीर तो तत्वों से बना हुआ है और हम एक आत्मा हैं जो शरीर को चलाते हैं, पर क्या इस गहराई में कोई कभी उतरा है? यह सिर्फ शब्दों का ज्ञान नहीं है, यह एक खुद का रियलाइजेशन है, खुद की खुद के प्रति जागृति है।

जब तक कोई अपने आपको पक्का ना करे कि मैं आत्मा हूँ, एक लाइट का सितारा, जो सभी कर्मेन्द्रियों को चलाता हूँ। जब तक यह पक्का नहीं होता, तब तक आपके जीवन में सदैव दुख ही रहेगा, परेशानियाँ ही रहेंगी। आपके जीवन कष्टों से भरी हुई रहेगी, क्योंकि आपने यह मान लिया जो कि आप हो ही नहीं।

हर किसी को चेक करना चाहिए कि मुझे तो यह ज्ञान मिला है कि मैं आत्मा हूँ। फिर यह ज्ञान मेरे कर्मों में क्यों नहीं उतर रहा है? मेरे व्यवहार में क्यों नहीं उतर रहा है? जबकि मुझे पूर्ण रूप से ज्ञात है कि मैं आत्मा हूँ, फिर भी मेरे स्वभाव संस्कार क्यों नहीं बदल रहे हैं? मेरा शरीर का उठने का, बैठने का ढंग क्यों नहीं बदल रहा है? मेरी हर प्रकार की सभी आदतें क्यों नहीं बदल रही हैं? अगर इनमें से कुछ भी बदल नहीं रहा है, माना आपने आपको आत्मा समझा ही नहीं है, ना ही आपने आपके उस लाइट का अनुभव किया है।

जब आत्मा अपने मूलस्वरूप अवस्था में रहती है, तो अपने आप सभी कर्मेन्द्रियाँ उसी के ऑर्डर प्रमाण चलती हैं। उन सभी को पता है कमांड देने वाला हमारा मास्टर जागृत हुआ है। पर आत्मा जब मूलस्वरूप अवस्था में नहीं रहती है, तो सभी कर्मेन्द्रियों द्वारा जो कुछ कर्म या व्यवहार होता है, वह मायावी अस्तित्व से होता है, आपके माया से होता है। और कुछ समय के बाद आप आत्मा को उसका बुरा लगता है; आपको पश्चाताप होता है कि हमसे ऐसे कर्म, ऐसा व्यवहार, इस प्रकार से हमारे संस्कार, इस प्रकार से हमारी वाणी, यह सब कुछ ऐसे कैसे हुआ? दुख तो आत्मा को समय चला जाने के बाद लगता है, पर उस समय आत्मा कुछ नहीं कर सकती। उस समय आत्मा अपनेसे पक्का करती है कि आगे से हमें हमारे कर्मेन्द्रियों द्वारा इस प्रकार से व्यवहार नहीं करना है, इस प्रकार से बोल नहीं बोलने हैं। परिस्थिति से आत्मा सीख जाती है। और आत्मा को भी पता चलता है कि यह हमारे मायावी स्वरूप के अस्तित्व ने यह किया। फिर वो उदास रहना हो, नाराज रहना हो, ऊपर-नीचे होना हो किसी के ऊपर क्रोध करना हो, किसी को बुरा-भला बोलना हो यह सब आत्मा रियलाइज़ करती है कि यह जो मेरे कर्मेन्द्रियों द्वारा हुआ, यह गलत हुआ और आत्मा अपनेसे पक्का करती है, अभी से हम ध्यान देंगे। फिर से कुछ समय चला

जाने के बाद कोई और परिस्थिति सामने आती है। फिर से उस ही परिस्थिति में मायावी अस्तित्व प्रबल रहने के कारण, फिर से उस परिस्थिति में मायावी अस्तित्व से ही व्यवहार होता है क्योंकि संस्कार जो बने हैं, सभी कर्मेन्द्रियों के। तो आत्मा ने कितना भी पक्का किया अगली बार ऐसे नहीं होगा हम सुधरेंगे, पर फिर से परिस्थिति आने पर आत्मा अपने स्थिति में ना होने के कारण, आत्मा की ऊर्जा ना होने के कारण, मायावी अस्तित्व उस परिस्थिति में पार्ट बजा लेता है। और आत्मा फिर से दुखी होती है, हम से यह फिर से हुआ, फिर से आत्मा अपने से प्रण लेती है कुछ भी हो जाए हमें यह छोड़ना है, हमें इस प्रकार से नहीं चलना है, यह लड़ाई कब तक चलती है? यह तब तक चलती है जब तक सभी को यह संपूर्ण रूप से रियलाइज़ नहीं होता कि “मैं आत्मा हूँ” और मुझ आत्मा को ही पार्ट बजाना है, ना कि किसी मायावी अस्तित्वों को पार्ट बजाने देना है।

जब जब किसी के साथ कोई भी विपरीत परिस्थिति सामने आती है अगर उस समय आत्मा अपनी मूलस्वरूप स्थिति में स्थित रहे तो आत्मा को पूर्ण रूप से स्पष्ट दिखेगा यह जो परिस्थिति आयी है उस परिस्थिति में मुझे क्या करना है? उस परिस्थिति में आत्मा अपने आपको शांत रख सकती है, उस परिस्थिति में आत्मा अपने सभी गुण स्वरूपों को इमर्ज रख सकती है और उस समय अगर आत्मा को यह समझ याद रहे की यह जो हो रहा है, यह मेरे साथ जो कुछ भी चल रहा है बाहरी रूप से हो या मानसिक रूप से हो, यह सब कुछ मेरा ही मुझे रीटर्न मिल रहा है।

यह एक अटल सत्य है, आपके जीवन में आपको कभी भी कोई भी बेवजह परेशान नहीं कर सकता। आपके जीवन में कभी भी किसी से भी बिना कारण के, किसी भी प्रकार की तकलीफ आपको नहीं मिल सकती। यह परमात्मा का रचा हुआ यूनिवर्स के लिए लॉ है, यह लॉ कभी कोई ब्रेक नहीं कर सकता। आपके साथ मानसिक रूप से हो, या शारीरिक रूप से हो, या आर्थिक रूप से हो, या पारिवारिक रूप से हो, या सामाजिक रूप से हो, किसी भी प्रकार से हो, जो कुछ आपके साथ हर पल, हर क्षण, हर दिन में जो होता है वह आपका ही आपको रीटर्न मिलता है, फिर वो दिखने में सुखकारक हो या कष्टदायक। जब आत्मा दिल से हर दिन को, हर दिन के हर पल को यह स्वीकार करती है कि आज के

दिन में जो कुछ भी मेरे साथ हुआ या होगा यह मेरा मुझे रिटर्न आना है चुकू होने के लिए, तब आत्मा अपनी सारी ताकत लगा कर उस अवस्था में पहुंच जाती है कि जो कुछ भी आए हम तैयार हैं और आत्मा की सारी पावर इमर्ज हो जाती है। पर यह सिर्फ ज्ञान नहीं है यह एक समझ है।

अगर कोई भी आत्मा दिन के शुरुआत में अपने को यह समझ दे, कि परमात्मा की कृपा से आज का दिन हमें इस शरीर में रहकर देखने को मिल रहा है, जिसके कारण आज दिन भर में मेरे साथ जो कुछ भी होगा वह सब कुछ चुकू होने के लिए मेरे सम्मुख आएगा। परमात्मा ने मुझे एक और दिन दिया है एक मौका दिया है यह चुकू करने का। जब कोई इस संकल्प से दिन की शुरुआत करेगा वह खुद ही अनुभव करेगा कि परिस्थिति तो आ भी जाएगी पर आप आत्मा ने संकल्प के रूप में आप आत्मा की शक्ति को जागृत रखा है उसके कारण परिस्थिति आपको कभी परिस्थिति नहीं लगेगी बल्कि आप परमात्मा के शुक्रगुजार रहेंगे कि अच्छा हुआ यह भी सामने आया समाप्त होने के लिए। जो कुछ भी आपके साथ होता है अगर हर कोई आत्मा सदैव, सदैव माना सदैव यही ध्यान रखें कि यह मेरे ही कल्याण के लिए है, तो आत्मा का परिवर्तन होने बगैर नहीं रह सकता, क्योंकि ड्रामा बहुत वंडरफुल है। इस ही संगम युग में सब कुछ उसे सेटल करना है हर किसी का हर किसी के साथ का कार्मिक अकाउंट है।

इसलिए हर कोई आत्मा हर दिन खुश रहे तत्पर रहे कि एक और दिन परमात्मा ने दिया है मेरे कल्याण के लिए। अगर आत्मा हर दिन की शुरुआत परमात्मा की शुक्रिया से करे तो उस आत्मा के पास उसकी सारी पावर इमर्ज रहेगी क्योंकि जब कोई आत्मा परमात्मा को शुक्रिया करती है दिन की शुरुआत में ही उससे पूरे दिन भर उसके सामने जो कुछ भी उस ही का आने जा रहा है वह सब कुछ चुकू करने के लिए परमात्मा से ही ताकत आत्मा को मिलती जाती है। यह जीवन उसकी देन है, जब हर आत्मा यह स्मृति में रखे तो उसके जीवन में जो कुछ भी घटित हो रहा होगा, या होगा उसमें उसको कल्याण ही दिखेगा। भल इस समय किसी को यह भी सवाल उठ सकता है कि इसमें ऐसा कैसा कल्याण है, ऐसे थोड़ी न होना चाहिए था, इस प्रकार से थोड़ी न होना चाहिए था पर आगे जाके हर आत्मा को हर बात

पूर्ण रूप से स्पष्ट होगी कि उस परिस्थिति में किस प्रकार से आपका उस समय कल्याण हुआ क्योंकि संगम युग है ही कल्याणकारी युग।

जब आत्मा अपने सत्य स्वरूप में, मूलस्वरूप में रहती जाएगी, उसको सारी बातें स्पष्ट होती जाएगी, कि उस परिस्थिति में किस प्रकार से हमारा कल्याण हुआ और आत्मा हर परिस्थिति से सीखती जाएगी।

परिवर्तन क्या है? परिवर्तन माना बदलाव जो नहीं चाहिए और जो चाहिए, जो सभी के लिए कल्याणकारी है, स्वयं के लिए भी और दूसरों के लिए भी। वह धारण करना यह है परिवर्तन। और कल्याण माना क्या? कल्याण माना जो अकल्याणकारी है, जिससे आत्मा और ही तमोगुणी बन गई, जिससे आत्मा ने विपरीत पार्ट बजाए, उन सभी मायावी अस्तित्वों को त्यागना माना अपना कल्याण करना। हर कोई चेक करे कि क्या आप आपके ऊपर कृपा कर रहे हो?

अगर आपको आपके मायावी अस्तित्वों का पता चल रहा होगा, तो समझ जाना कि आप कल्याण की ओर चल पड़े हो क्योंकि जैसे-जैसे आपको मायावी अस्तित्व पता चलते जाएंगे, वैसे-वैसे वह मुक्त होते जाएंगे। पर सिर्फ ऐसे नहीं कि मेरे अंदर तो यह है, यह है, यह है। एक है ऊपर-ऊपर से बातें करना और एक है रियलाइज़ होना कि सच में यह मुझे नहीं चाहिए। जब कोई आत्मा का दिल का संकल्प उठता है, किसी भी कारण को लेकर, फिर वो उसके विपरीत संस्कार हो या किसी भी प्रकार के विपरीत गुण हो, दिल का सच्चा संकल्प उन विपरीत गुणों को, विपरीत अस्तित्वों को मुक्ति ज़रूर दिलाएगा। अगर आपसे कोई विपरीत गुण या आपके कोई विपरीत अस्तित्व मुक्त नहीं हो रहे हैं, तो समझ जाना आप आत्मा का उसके लिए दिल का संकल्प नहीं उठा है और ना ही आपको वह पूर्ण रूप से रियलाइज़ हुआ है। परमात्मा ने बहुत सिंपल प्रोसेस रखी है, बस दिल से रियलाइज़ करना और अवगुणों को मुक्ति देना इसमें कोई मेहनत नहीं है। हर कोई अपनी चेकिंग अवश्य करें कि क्या आप आपके कल्याण की यात्रा की ओर चल रहे हो या आप अभी भी वहाँ पर ही हो जबसे आपने यात्रा शुरू की है। यह सवाल हर कोई अपने से अवश्य पूछे। स्वयं को पूछेंगे तब ही समझ में आएगा कि कहाँ तक पहुंचे हैं, यात्रा शुरू हुई

है या नहीं हुई है। फिर अभी करना क्या है? हर कोई इस होमवर्क को अवश्य करें। जिन आत्माओं को अपना कल्याण करना है, अपना परिवर्तन करना है, वह इस होमवर्क को गंभीरता से लें, सब कुछ आपके ही हाथ में है। इसमें कोई किसी भी प्रकार से मदद नहीं कर सकते। आपके साथी सहयोगी होंगे, कुछ क्षण के, पर हर किसी को अपनी यात्रा करनी होगी। किसी के आधार से कभी कोई परिवर्तन नहीं हो सकता। हर किसी को अपनी जिम्मेदारी लेनी होगी।

तो हर कोई अपनी चेकिंग अवश्य करें कि क्या हमारे कल्याण की यात्रा शुरू हुई है या अभी भी हम वहाँ पर ही हैं, जब से इस मार्ग पर आये हैं? परिवर्तन के लिए हर किसी को परमात्मा से ताकत सदैव मिलती रहती है, बस आपका दृढ़ संकल्प होना चाहिए कि मुझे मेरा कल्याण करना है, मुझे मेरा संपूर्ण परिवर्तन करना है।

सभी को नमस्ते।

ॐ परमात्मने नमः